Swami Vivekananda Advanced Journal for Research and Studies
Online Copy of Document Available on: www.svajrs.com

ISSN:2584-105X Pg. 64-67

शुंग कालीन स्थापत्य एवं कला

कोमल वर्मा
शोधार्थिनी
प्राचीन इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग
दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

Accepted: 22/10/2025
Published: 28/10/2025 *DOI: http://doi.org/10.5281/zenodo.17488119*

सारांश

भारतीय कला भारतवर्ष के विचार, धर्म, तत्त्वज्ञान और संस्कृति का दर्पण है। भारतीय जन - जीवन की उत्कृष्ट व्याख्या कला के माध्यम से होती है। शुंग काल संस्कृति, साहित्य और धार्मिक आन्दोलन का काल था। जब रामायण, महाभारत एवं पुराणों की रचना और पुनर्गठन के बहुमुखी प्रयत्न हुए। कला के क्षेत्र में इस काल में पाषाण शिल्प और स्थापत्य का व्यापक प्रचार हुआ। स्तूप, तोरण, वेदिका और मूर्तियों की रचना के लिए पत्थर का उपयोग सामान्य बात थी। भरहुत, साँची, अमरावती जैसे महाचेतिय या बड़े स्तूप इस युग में बने। बोधगया के बोधि - मेड या वज्रासन के चारों ओर पाषाण की नाना प्रकार के अलंकरण एवं नक्काशी की गई, मूर्तियाँ इसी युग के शिल्पियों की रचनाएँ है, जिनसे देश के आगे आने वाले मार्गीय शिल्प का सूत्रपात होता है। शुंगकालीन कला में रसतत्त्व और आनन्द को भी विशेष स्थान दिया गया है। शुंग नरेशों का शासनकाल कला व स्थापत्य की उन्नति के लिए विख्यात है। इस काल की कला धर्म की अपेक्षा लौकिक जीवन से अधिक सम्बन्धित है। इसका प्रधान विषय आध्यात्मिक या नैतिक न होकर पूर्णतया मानव जीवन के लौकिक पक्ष को रेखांकित करता है।

मुख्य शब्द *- चैत्यगृह, स्तूप, जातक कथाओं, स्तम्भ, वेदिका, पाषाण।*

प्रस्तावना

शुंग काल की स्थापत्य एवं कला का भारतीय इतिहास में अपना विशेष महत्व है। मौर्य वंश के पतन के बाद तथा गुप्त वंश के उदय तक की पाँच शताब्दियों में भारतीय कला का विलक्षण बहुमुखी विकास और व्यापक उत्कर्ष हुआ। इस युग की कला की प्रमुख विशेषता यह है कि इस समय पत्थर का प्रयोग अधिक होने लगा था। प्रस्तर शिल्प और स्थापत्य कला का अभूतपूर्व विकास हुआ। इस काल से पहले मूर्ति एवं भवनों के निर्माण में लकड़ी का प्रयोग अधिक होता था। इस समय स्तूपों, मूर्तियों, तोरणों और वेदिकाओं के निर्माण में पत्थर का प्रयोग प्रचुर मात्रा में होने लगा था। भरहुत, साँची, बोधगया जैसे प्रसिद्ध स्तूप इसी युग की देन है। पहाड़ों में शिलाओं को काट कर गुहाओं, चैत्यों, विहारों और संघारामों का निर्माण होने लगा। इस काल का सर्वोत्तम स्मारक स्तूप है। भारतीय कला का विकास क्रम स्तूप - चैत्यगृह - देवमंदिर है।

स्तूप का उल्लेख सर्वप्रथम ऋग्वेद में मिलता है। प्राकृत में इसके लिए 'धूप शब्द मिलता है। प्रारम्भ में स्तूप का प्रयोग मृतदेह के भस्मावशेषों के ऊपर निर्मित समाधि के अर्थ में हुआ। कालान्तर में स्तूप शब्द महात्मा बुद्ध तथा उनके प्रमुख अनुयायियों के जीवन के किसी घटना विशेष से सम्बन्धित स्थान पर उस स्मृति को जीवित रखने के स्मारक के रूप में निर्मित किये जाने लगे थे। स्तूप चार प्रकार के होते है - पारिभौगिक स्तूप में महात्मा बुद्ध द्वारा प्रयोग में लाई गई वस्तुएँ जैसे - भिक्षापात्र, चीवर इत्यादि, शारीरिक स्तूप में महात्मा बुद्ध एवं उनके शिष्यों की अस्थियाँ रखकर निर्माण किया जाता था। उद्देशिक स्तूप महात्मा बुद्ध के जीवन की घटनाओं से सम्बन्धित थे। संकल्पित स्तूप छोटे आकार के मनौती स्तूप, जिन्हे बौद्ध तीर्थ स्थलों पर श्रद्धालुओं द्वारा निर्मित किया जाता था। अडं (उल्टा कटोरा), मेधि, हर्मिका, यष्टि एवं छत्र स्तूप के अंग होते थे। दक्षिण के स्तूप में इसी के साथ आयक स्तम्भ भी जोड़ दिया जाता था। स्तूपों में गर्भगृह नहीं होता था, अपितु इनकी जगह हर्मिका होती थी। हर्मिका (देवसदन) स्तूप का सबसे महत्वपूर्ण भाग था। प्रदक्षिणा (परिक्रमा मार्ग) स्तूप में रखे स्मारक चिन्हों के प्रति सम्मान प्रकट करने का प्रमुख रूप था। छोटे स्तूप को 'दागोवा (अल्पेशाख्य) एवं बड़े स्तूप को 'महेशाख्य' कहा जाता था। कालान्तर में वेदिका के चारों दिशाओं में प्रवेशद्वार भी बनाये जाने लगे तथा उन पर मेहराबदार तोरण लगाये जाने लगे। इस प्रकार मेधि, वेदिका, अण्ड, प्रदक्षिणापथ, हर्मिका, यष्टि, छत्र, तोरण आदि स्तूप वास्तु के प्रमुख अंग हैं।

भरहुत स्तूप मध्य प्रदेश के सतना जिलें में है। इसका निर्माण मूलतः अशोक द्वारा ईंटों से कराया गया था, परन्तु इसके पाषाण वेदिका तथा तोरणों का निर्माण शुंग काल में हुआ। 1873 ई0 में कनिंघम ने इसे खोजा था। यह स्तूप अद्यतन पूर्णतया नष्ट हो चुका है। इसके भरहुत, भगवारा तथा पटौरा स्थलों से खोजे गए थे, जो वर्तमान में कलकत्ता और प्रयाग के संग्रहालयों में सुरक्षित है।[1] भरहुत स्तूप की वेदिका पूर्ण लाल पाषाण से निर्मित थी जिसमें चार तोरण द्वार लगे थे। जिनका निर्माण शुंग काल में हुआ था।[2] इसके पूर्वी द्वार पर शुंग शासक धनभूति के लेख अंकित है।[3] इस स्तूप की वेदिका स्तम्भ तथा तोरणपट्टी पर विविध्य उत्कीर्ण मूर्तियाँ तथा चित्र मिलते है।[4] तोरण द्वारों पर विभिन्न ऐतिहासिक घटनाओं जैसे श्रावस्ती में बुद्ध द्वारा उपदेश, कोसल नरेश प्रसेनजित द्वारा बुद्ध की वन्दना, एरावत नागराज द्वारा बोधिवृक्ष की पूजा, अजातशत्रु द्वारा बुद्ध का दर्शन व उनके पद्चिन्हों की वन्दना, पाँच फन वाले मुचलिन्द नागराज द्वारा बुद्ध की सुरक्षा, अनाथपिण्डक श्रेष्ठी द्वारा बुद्ध को जेतवन विहार दान का अंकन प्राप्त होता है।

वेदिका के स्तम्भ एकाश्मक या एक ही पत्थर से बने है। उनके कोने काट दिए गए है जिससे वे अठपहलु हो गये है। स्तम्भों पर सप्त मनुषी बुद्धों में छः का प्रतीकात्मक अंकन वट, शाल , उदुम्बर, पाटल, न्यग्रोध, पीपल आदि वृक्षों द्वारा किया गया है।[5] प्रसेनजित स्तम्भ पर अलसुम्बा, मिश्राकेशी, सुदर्शना, सुचिलोमा नामक यक्ष तथा चन्द्रा, सिरिमा, महाकेका आदि नामक यक्षी का उत्कीर्णन हुआ है। इसी प्रकार तीन देवता ब्रह्मा, शुक्र व मार का अंकन भी भरहुत में है। इन्द्रसाल गुहा में इन्द्र व बुद्ध के वार्तालाप का दृश्यांकन का भी उल्लेख है। भरहुत के दृश्यों में एक अश्वारोही स्त्री एक हाथ में ध्वज लिए है जिस पर सुवर्ण या गरुड़ चिन्ह है। भरहुत स्तूप में बुद्ध की मानव मूर्तियाँ नहीं मिलती है, अपितु उनका अंकन स्तूप, धर्मचक्र, छत्र, बोधिवृक्ष, चरणपादुका, त्रिरत्न आदि प्रतीकों के रूप में मिलते है। वेदिका पर गजलक्ष्मी का अंकन भी महत्वपूर्ण है। बुद्ध के पूर्वजन्म की जातक कथाओं का अंकन भी सर्वप्रथम इसी स्तूप में मिलता है। भरहुत स्तूप पर मानवीय, पशु व यक्षी रूप में कुल 24 जातक कथाओं का अंकन है जिसमें बुद्ध से सम्बन्धित पक्षों का विवेचन करने वाले छदन्त जातक, महाजनक जातक, वेस्सान्तर जातक, मुगापक्ख जातक आदि है।[6] यहाँ कथाओं का चित्रण वर्णनात्मक शैली में है। यहाँ की कला प्रथम लोककला थी।

साँची स्तूप - यह मध्य प्रदेश के रायसेन जिला के विदिशा नगर के पास है। इसे 1818 ई0 में जनरल रायलट ने खोज था। 1912 ई0 से 1920 ई0 के मध्य सर जॉन मार्शल ने साँची के स्मारकों को संरक्षित किया तथा अल्फ्रेड फूसे के साथ मिलकर द मान्यूमेंटस ऑफ साँची पुस्तक लिखी। साँची विदिशा नगर के लगभग 6 मील दक्षिण में स्थित है। इसका प्राचीन नाम ककनादबोट मिला है।[7] सम्राट अशोक के समय यहाँ एक विशाल स्तूप का निर्माण हुआ था जिसके कारण इसे महाचैत्य कहा जाता है। उसके बाद यहाँ अनेक स्तूप विहार और मंदिर बने। इससे इस स्थान का नाम चैत्यगिरि प्रसिद्ध हुआ। विदिशा नगर शुंगकाल में अत्यन्त समृद्ध नगरी थी। वहाँ के निवासियों ने साँची तथा उसके आसपास अनेक कलापूर्ण स्मारकों का निर्माण करवाया था। साँची में मुख्यतः तीन स्तूप है -

महास्तूप (स्तूप संख्या-1) - यह साँची के तीनों स्तूपों में सर्वाधिक सुरक्षित महास्तूप है। इसका ईंटों का बना मूलभ्त हिस्सा अशोक के समय का है। शुंगकाल में इसे गहरे बैंगनी धूसर चूना पत्थर से आच्छादित कर दिया गया। काष्ठ वेदिका को पाषाण में निर्मित कर इसका आकार भी दुगुना किया गया। सातवाहन काल में वेदिका के चारों दिशाओं में चार

तोरण द्वार निर्मित किए गए।[8] महास्तूप के प्रदक्षिणापथ के चार मंदिर गुप्तकाल में बनाये गए। इस महास्तूप को त्रिमेधी स्तूप भी कहा गया है, क्योंकि यहाँ तीन मेधियाँ थी - भूमितल, मध्य भाग तथा हर्मिका पर। भरहुत स्तूप की मुख्य नक्काशी वेदिका पर की गई है, वही साँची की महास्तूप वेदिका सादी है। महास्तूप के तोरण द्वार सर्वाधिक सुन्दर, कलापूर्ण तथा आकर्षक है। चारों तोरण द्वारों में सर्वप्रथम दक्षिणी द्वार बना इसमें अशोक द्वारा रामग्राम स्तूप के दर्शन के लिए आना, सप्त मनुषी बुद्ध, सातवाहन शातकर्णी के स्थापित आनन्द लेख, अशोक द्वारा अपनी दो पत्नियों के साथ बोधिवृक्ष की पूजा का दृश्य इत्यादि है।[9] उत्तरी तोरण द्वार कला का सर्वोत्तम शिल्पांकन है। अनाथपिण्डक द्वारा जेतवन विहार का दान, कोसल नरेश प्रसेनजित द्वारा बुद्ध के दर्शनार्थ जाना इत्यादि। पूर्वी तोरण द्वार में बोधिवृक्ष के रूप में सप्त मनुषी बुद्ध, अशोक का तिष्यरक्षिता के साथ बोधिवृक्ष की पूजा करना, मयूर का अंकन, बिम्बिसार का बुद्ध के दर्शनार्थ जाना इत्यादि। पश्चिमी तोरण द्वार में सप्त मानुषी बुद्ध, पिता शुद्धोधन सहित शाक्य राजाओं का धर्म परिवर्तन तथा बुद्ध के स्वागत हेतु नगर के बाहर आना। इसके अतिरिक्त महात्मा बुद्ध के जीवन की घटनाओं - जन्म, महाभिनिष्क्रमण, सम्बोधि, धर्मचक्रप्रवर्तन, महापरिनिर्वाण के प्रतीक स्वरूप दिखाया गया है।[10] साथ ही श्याम जातक, छन्दक्त जातक, अलबुस जातक, महाकपि जातक के दृश्य भी उत्कीर्ण है। गजलक्ष्मी का अंकन, हस्तिशीर्ष युक्त चक्र स्तम्भ तथा सिंहशीर्षयुक्त चक्र स्तम्भ भी उल्लेखनीय है। बुद्ध की उपासना करते हुए यक्ष - यक्षी, गन्धर्व, नाग, ब्रह्मा, इन्द्र तथा लक्ष्मी भंगिमापूर्ण मुद्रा में खड़ी स्त्रियों का अंकन भी महत्वपूर्ण है।[11]

स्तूप संख्या - 2 एक छोटे चबूतरे पर बना है। इसकी वेदिका पर वे सभी दृश्य उत्कीर्ण है, जो महास्तूप के तोरण द्वार पर बने है। गौतम बुद्ध का जन्म, सम्बोधि, धर्मचक्रप्रवर्तन तथा महापरिनिर्वाण को कमल, पीपल, वृक्ष, चक्र तथा स्तूप के प्रतीकों द्वारा दिखाया गया है। नाग, यक्ष, सुपर्ण आदि का अंकन भी महत्वपूर्ण है। कंकाली टीला के जैन स्तूप का कला - विधान साँची के इस स्तूप से साम्य रखता है।[12] सोपान मार्ग की वेदिका तथा हर्मिका में भी सादे अलंकरण मिलते है।

स्तूप संख्या - 3 में महात्मा बुद्ध के दो प्रिय शिष्यों सारिपुत्र तथा महामोद्ग्लायन के धातु अवशेष सुरक्षित है। इस स्तूप का केवल एक ही द्वार है। इस स्तूप पर मालाधारी यक्ष, बोधिवृक्ष पूजा, चक्र पूजा, मकर जिसके मुँह में कमल बेलि निकल रही है, पंच फणयुक्त नागराज, गजलक्ष्मी, ललित क्रीड़ा में रत मिथुन आकृतियाँ, देवसभा के दृश्य अत्यन्त उत्कृष्ट है।[13]

मुख्य स्तूप के दक्षिणी द्वार के समीप अशोक स्तम्भ क्षीण अवस्था में रखा है। इस स्तम्भ का शीर्ष हंसमाला से अलंकृत है जो साँची के संग्रहालय में रखा है। कला की दृष्टि से यह स्तम्भ अत्यन्त उत्कृष्ट है। साँची में विवेच्य काल के दो मंदिरों के अवशेष प्राप्त हुए है। पहला मंदिर स्तूप संख्या - 1 के दक्षिणी द्वार पर है। साँची के स्मारक भारतीय स्थापत्य और मूर्तिकला की अमर कृतियाँ है। इनमें भारतीय लोक जीवन की मधुर गाथाएँ संजोयी है। धार्मिक एवं सामाजिक मान्यताओं, उत्सवों तथा अमोद - प्रमोद के दृश्य साँची के बहुसंख्यक अवशेषों से मिलती है।

बोधगया स्तूप - यह शुंग कला का महत्वपूर्ण केन्द्र था। मौर्य सम्राट अशोक ने बुद्ध की ज्ञान प्राप्ति स्थल पर ईंटों का बोधिमंदिर या महाविहार बनवाया था। बोधगया के प्राचीन स्थल का पुनरुद्धार करते समय अशोक कालीन बोधिमण्ड के अवशेष प्राप्त हुए है। बोधिमण्ड या वज्रासन की चारों ओर अशोक के समय रक्षा दीवार का निर्माण कराया गया था। शुंगकाल में इसके चारों तरफ पाषाण वेदिका बनाई गई थी। इन पर जातक कथाओं, बुद्ध के जीवन से सम्बन्धित ऐतिहासिक दृश्य, वेदिका पर कल्प वृक्ष इत्यादि के दृश्य उत्कीर्ण है।[14] बोधगया की वेदिका के कुछ पत्थरों पर ब्राह्मी लेख खुदे हुए है। इनमें राजा इन्द्राग्निमित्र की रानी कुंरगी तथा राजा ब्रह्ममित्र की रानी नागदेव का नाम लिखे है, जिन्होंने इस वेदिका का निर्माण करवाया था।[15] बोधगया की वेदिका पर कमल पुष्प का सुन्दर अलंकरण है। इसलिए इसे पद्रमवर वेदिका कहा जाता है वज्रासन के पास एक चबूतरा बनाया गया था, जिसके दोनों ओर 11 खम्भों की चौकियाँ है। एक चौकी पर खड़ी स्त्री की मूर्ति है, जिसे 'श्री लक्ष्मी माना जाता है। कल्पवृक्ष, चक्र, यक्ष - यक्षी, गन्धर्व आदि के मनोरंजक चित्रण इन शिलापट्टों पर दिखाई देते है। सवक्ष संह, गज, अश्व, नर - मत्स्य आदि का उत्कीर्णन अत्यन्त रोचक है।

बेसनगर शुंगकाल का प्रसिद्ध नगर था। कनिंघम ने 1877 ई0 में विदिशा (बेसनगर, मध्य प्रदेश) हेलियोडोरस के गरुड़ स्तम्भ की खोज की, जो द्वितीय शताब्दी ई0पू0 का हिन्दू धर्म से सम्बन्धित प्रथम पाषाण स्तम्भ है। स्तम्भ के लेखानुसार हिन्द यवन राजा एण्टियलकिडस का राजदूत हेलियोडोरस शुंग शासक भागभद्र के दरबार में गया था। यह स्तम्भ चार भिन्न - भिन्न आकार वाले हिस्सों में बंटा है। निचला हिस्सा 8, मध्य 14, उससे ऊपर वाला हिस्सा 32 फलकयुक्त तथा सबसे ऊपरी हिस्सा गोलाकार है। स्तम्भ शीर्ष पर उल्टे कमल का अंकन है तथा इस पर गरुड़ का प्रतीक अंकन था। विदिशा से ही तीन मीटर ऊँची कुबेर की प्रतिमा प्राप्त हुई है जिसके बाएं हाथ में धन की थैली विद्यमान है।

उड़ीसा के पुरी जिले में स्थित उदयगिरी, खण्डगिरी पहाड़ियों पर शुंगों के समकालीन राजा खारवेल ने जैन साधुओं के निवास हेतु गुफा का निर्माण करवाया था।[17] उदयगिरी की रानीगुम्फा एवं खण्डगिरी की अंनतगुम्फा में सुन्दर चित्र मिलते है। उदयगिरी की प्रमुख गुफाओं में रानी गुफा (यहाँ की सबसे बड़ी गुफा), गणेश गुफा, हाथी गुफा एवं व्याघ्र गुफा है।

अशोक के राज्यकाल में कला के विकास की जो प्रगति प्रारम्भ हुई, वो शुंग काल में न केवल प्रगतिशील रही, अपितु उसमें नए विचारों और नई तकनीक का भी समावेश हुआ। साँची, भरहुत, बोधगया इत्यादि में विभिन्न प्रकार की कला शैलियों ने जन्म लिया। शुंग काल में बुद्ध की कोई प्रतिमा नहीं बनाई जाती थी, उन्हे सर्वत्र चरण, छत्र, पादुका, धर्मचक्र, आसन, कमल, या स्वास्तिक के संकेत से प्रकट किया जाता था। भरहुत, साँची, बोधगया के कलाकारों के विषय यद्यपि

बौद्ध थे उनका उद्देश्य स्तूपों को अलंकृत करना था किन्तु मूर्तियाँ धार्मिक न होकर यर्थाथवादी, प्राकृतिक और ऐन्द्रियक है। इनमें धर्मतत्त्व की प्रधानता नहीं अपितु लोक कला का सच्चा प्रतिबिम्ब है।

सन्दर्भ सूची

1.वेदालंकार, हरिदत्त, प्राचीन भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन, हिन्दी भवन, महात्मा गाँधी मार्ग, लखनऊ, प्रथम संस्करण, 1972, पृ0 453.

2.योगमणि, निरंजसिंह, प्राचीन भारत का साहित्यिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, रिसर्च पब्लिकेशन, त्रिपोलिया, जयपुर, पृ0 333.

3.वेदालंकार, हरिदत्त, प्राचीन भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, पूर्वोद्धत, पृ0 453.

4.पाण्डेय, वी0के0, प्राचीन भारतीय कला, वास्तु एंव पुरातत्त्व, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, 2013, पृ0 124.

5.वही, पृ0 128.

6.वेदालंकार, हरिदत्त, प्राचीन भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, पूर्वोद्धत पृ0 461.

7.फ्लीट, जे0एफ0, एन इन्सक्रिपशन्स फ्रॉम बेसनगर, ए0एस0आई0ए0आर0, 1909, पृ0 1087.

8.जोशी, महेश चन्द्र, युग - युगीन भारतीय कला, राजस्थानी ग्रंथालय, जोधपुर, 1994, पृ0 17.

9.पाण्डेय, वी0के0, प्राचीन भारतीय कला, वास्तु एंव पुरातत्त्व, पृ0 133.

10. वही, पृ0 131 - 32

11. मार्शल, सर जॉन एण्ड अल्फ्रेड फूसे, द मान्यूमेण्ट्स ऑफ साँची, स्वाति पब्लिकेशन, दिल्ली, द्वितीय संस्करण, प्लेट 74.

12.बाजपेयी, कृष्ण दत्त, भारतीय वास्तुकला, हिन्दी साहित्य समिति, लखनऊ, पृ0 71.

13.वही, पृ 71.

14. राय, उदय नारायण, प्राचीन भारत में नगर तथा नगर जीवन, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद, 1965, पृ0 380.

15. पाण्डेय, वी0के0, प्राचीन भारतीय कला, वास्तु एंव संस्कृति, पूर्वोद्धत पृ0 136.

Disclaimer/Publisher's Note: The views, findings, conclusions, and opinions expressed in articles published in this journal are exclusively those of the individual author(s) and contributor(s). The publisher and/or editorial team neither endorse nor necessarily share these viewpoints. The publisher and/or editors assume no responsibility or liability for any damage, harm, loss, or injury, whether personal or otherwise, that might occur from the use, interpretation, or reliance upon the information, methods, instructions, or products discussed in the journal's content.

****